P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्त्री– विमर्श की अवधारणा एवं मुक्ति की दिशाएँ

कविता
शोधार्थिनी,
हिन्दी विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

स्त्री–विमर्श प्राचीन भारतीय वाड्मय से लेकर आज तक किसी–न–किसी रूप में विचारणीय है। स्त्री विमर्श में पितृक मूल्यों, मापदण्डों, वर्जनाओं के बारे में अनेक सवाल उठाये हैं। जो स्त्री को वाणीहीन, आत्महीन,स्वत्वहीन अस्तित्व को रेखांकित करता है। समाज में स्त्री की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, संवैधानिक स्वतंत्रता कहां तक है इसके ज्वलंत मुद्दे सामने लाना है, समाज में मानव के दो रूप स्त्री–पुरुष हैं लेकिन फिर भी क्यों समाज में पुरुषों को स्त्रियों से ज्यादा महत्व दिया जाता है, यह सोचनीय प्रश्न है ? स्त्री–विमर्श के अंतर्गत नारी मुक्ति से जुड़े हुए प्रश्न इक्कीसवीं शताब्दी के सबसे ज्वलंत मुद्दे हैं। पूरे विश्व में स्त्री विमर्शों का उभार है जो भूमण्डलीकरण युग की देन है यह स्वयं में एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो विकसित राष्ट्रों से विकासशील पिछड़े हुए देशों में चल रही है। स्त्री विमर्श ने पहली बार स्वतंत्र दृष्टि से औरत के हक में संघर्ष किया है तथा पैतृक प्रतिमानों से सोचने की दृष्टि पर जबरदस्त प्रश्न चिह्न लगाए हैं उन्हें बुरी तरह से रद्द किया है। आज वे अपने अधिकारों की माँग करती हैं और अपना स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है, स्वावलम्बी बनना ताकि उन्हें पितृसत्तात्मक समाज के आगे झुकना न पड़े पुरुषों के समान ही स्त्रियां सभी क्षेत्रों में समान अधिकारों की माँग करती हैं, वे पुरुषों का विरोध न करके बल्कि उनकी स्त्रियों के प्रति विकृत सोच का प्रतिवाद करती है।

मुख्य शब्द : स्त्री–विमर्श, स्त्री–मुक्ति, आत्महीन, स्वत्वहीन, स्वतंत्र अस्तित्व, स्वावलम्बी, पितृसत्तात्मक समाज, अस्मिता, आत्म गौरव, लिंग भेद, स्वाभिमान, आर्थिक स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

"नारीवाद पुरुषों का नही उनकी मानवीयता घटाने वाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है। जो मर्दानगी के नाम पर गढ़ा गया है, और उसके पीछे झूठी अहम्मन्यता और उत्पीड़क प्रवृत्ति के अलावा कुछ नहीं है"– मृणाल पाण्डेय

नारी प्रकृति का सुंदरतम उपहार हैं, नारी सृष्टि का आधार होने के कारण उसे विधाता की अद्वितीय रचना कहा जाता है, नारी समाज, संस्कृति और साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है, इन सारे गुणों के होते हुए भी समाज में उसे वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारिणी हैं। पितृसत्तात्मक समाज में नारी को सदैव उसके अधिकारों से वंचित रखा उसे मात्र अपनी भोग की वस्तु बनाने का प्रयत्न किया। जहाँ शोषण और अन्याय होता है वहां उसका प्रतिरोध भी होता है, मुक्ति की कामना प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक कामना होती है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र होना आवश्यक है, स्वतंत्रता का अर्थ आजादी नहीं बल्कि एक जीवन मूल्य है। विश्व में स्त्री मुक्ति के संघर्ष का इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना स्त्री के शोषण का इतिहास। समता, स्वातंत्रय, समानता के इस युग में नारी स्वतंत्रता का अपना विशेष महत्व है, मानव समाज और राष्ट्र की उन्नति एवं विकास के लिए स्त्री–मुक्ति आवश्यक है। प्राचीन समय से लेकर अब तक नारी ने किसी न किसी रूप में अपने प्रति होने वाले अन्याय का विरोध किया है। आधुनिक काल में आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक प्रगति के कारण समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ नारी में भी स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई। वह अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत हुई है। तभी से समाज में स्त्री–विमर्श की शुरुआत हुई। स्त्री–विमर्श ने स्त्रीत्व तथा स्त्रीवादी आलोचना के ज्वलंत प्रश्नों को उठाया है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का मुख्य उद्देश्य स्त्री–विमर्श की अवधारणा पर सूक्ष्म चर्चा एवं स्त्री मुक्ति की दशाओं से समाज को परिचित करना है, प्राचीनकाल से लेकर आज तक स्त्री पर अनेक अत्याचार होते रहे। वे ये सब सहन करती रही

लेकिन आज स्थिति में काफी सुधार आया है, जिसका श्रेय उन स्त्रियों को जाता है जो अपने प्रति जागरूक हुई है, अपनी लड़ाई लड़ रही हैं। वे आज पुरुषों के समान हर क्षेत्र में कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं, लेकिन आज भी समाज में अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ स्त्रियां अपने प्रति जागरूक नही हैं, जो नियम पितृसत्तात्मक समाज में बनाए गये हैं वे उनका ही पालन करते हैं। उन क्षेत्रों में आज जागरूकता बहुत आवश्यक है।

1. स्त्री–विमर्श पर सूक्ष्म चर्चा।
2. स्त्री को उसके व्यक्तित्व और अस्मिता से परिचित कराना।
3. स्त्री को उनकी शिक्षा के प्रति जागरूक करना।
4. स्त्री को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना।
5. समाज में व्याप्त शोषण एवं उत्पीड़न को समाप्त करना।
6. स्त्री को आत्मनिर्भर बनाना ।
7. आर्थिक स्वावलंबन की पहल।
8. समान वेतन के प्रति स्त्री में जागरूकता।
9. यौन उत्पीड़न सम्बन्धी जागरूकता।
10. स्त्री को समाज की वास्तविक स्थिति से अवगत कराना।

साहित्यावलोकन

स्त्री–विमर्श ने ही स्त्री की स्थिति का स्पष्ट विवेचन किया है कि किस प्रकार पितृसत्तात्मक समाज ने औरत को अन्या की स्थिति में बनाकर रखा है स्त्री–विमर्श ने पितृक मूल्यों, मापदण्डों, वर्जनाओं के बारे में अनेक सवाल उठाए हैं। जो स्त्री की वाणीहीन, आत्महीन, स्वत्वहीन अस्तित्व को रेखांकित करता है, स्त्री को हाशिये पर रखने और उसका एक परजीवी की भांति गुलामवत जीवन जीने को स्त्री–विमर्श में रेखांकित किया जाता है। स्त्री–विमर्श ने वास्तव में पितृसत्तात्मक सभ्यताओं व संस्कृतियों के वास्तविक चेहरे को दर्शाया है पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री का हमेशा से शोषण होता रहा है।

सिमोन स्पष्ट कहती हैं कि "औरत को औरत होना सिखाया जाता है और बनी रहने के लिए उसे अनुकूल किया जाता है तथ्यों के विश्लेषण से समझ में आयेगा कि प्रत्येक मादा मानव जीव अनिवार्यता एक औरत नहीं है, यदि वह औरत होना चाहती है, तो उसे और तपने की रहस्यमय वास्तविकता से परिचित होना पड़ेगा।"[1]

स्त्री की दोयमहीन अवस्था का जिम्मेदार पितृसत्तात्मक ढांचे के नियम कानून कायदे एवं सोच का ही प्रभाव है। स्त्री–अस्मिता या स्त्री–विमर्श की अवधारणा आधुनिक युग की देन है, स्त्री अपने स्व की पहचान लिंग, जाति, धर्म, देश, राष्ट्र, रिश्ते–नाते, बोली, समाज तथा व्यवसाय के आधार पर करती है, स्त्री के स्व की पहचान करना ही स्त्री विमर्श है। स्त्री विमर्श का विचार मूलतः पश्चिम की देन है।

स्त्री–विमर्श ने पहली बार स्वतंत्र दृष्टि से औरत के हक में संघर्ष किया है तथा पैतृक प्रतिमानों से सोचने की दृष्टि पर जबरदस्त प्रश्न चिह्न लगाये हैं, उन्हे बुरी तरह से रद्द किया है यहीं से स्त्री–विमर्श की शुरुआत होती है।

" सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री–चेतना ने ही स्त्री–विमर्श को जन्म दिया है। स्त्री–विमर्श और कुछ नहीं आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समानाधिकारी की पहल का दूसरा नाम है।"[2]

किसी भी सभ्य समाज अथवा संस्कृति की अवस्था का सही आंकलन उस समाज में स्त्रियों की स्थिति का आंकलन करके ज्ञात किया जा सकता है। जैसा कि हम सभी जानते है कि हमारा समाज सदियों से पितृसत्तात्मक रहा तथा उसमें स्त्रियों की स्थिति सदैव एक–सी नहीं रही। जब स्त्रियों ने अपनी सामाजिक भूमिका को लेकर सोचना–विचारना आंरभ किया तो वहीं से स्त्री–विमर्श, स्त्री–अस्मितां तथा स्त्री आन्दोलन पर बहस शुरू हुई।

इग्लैंड के जॉन स्टुवर्ड मिल (1806–1873) ने सर्वप्रथम स्त्री अस्मिता को नये सन्दर्भों में समाहित करने का प्रयास किया समानाधिकार की बात करते हुए स्त्री के लिए मताधिकार की मांग की, और इसी मांग के परिणामस्वरूप स्त्री की स्वतंत्रता के नये आयामों का उदय हुआ।

स्त्री–विमर्श की मुख्य लेखिका 'सीमोन द् बोउवार' ने 'द् सैकण्ड सेक्स' नामक पुस्तक लिखकर स्त्रीवादी आलोचना की शुरुआत की वे फ्रांस की ही नहीं दुनिया की महान स्त्रीवादी लेखिका है।

इसके अतिरिक्त केट मिलट, बैटी फरीडने, गायत्री चक्रवर्ती, इरीगैरो, क्रिसिटिविया, स्पीवाँक आदि अन्य रचनाकारों ने अपने उत्तेजक प्रश्नों के द्वारा उन्होनें स्त्री की वास्तविक अवस्था को सामने लाकर सारे समाज को आश्चर्य चकित कर दिया।

इन लेखकों के अतिरिक्त और अन्य लेखकों ने स्त्रीवाद को प्रेरित किया है, जिन में एंगेल्स, बैजामिन, लूकाच समृद्ध परिवारों से होने के बावजूद भी नारी मुक्ति के लिए संघर्ष करते रहे थे। पश्चिम से आयी यह स्त्रीवादी विचारधारा भारतीय परिप्रेक्ष्य में भिन्न होने पर भी मूल सिद्धांत एक ही है। भारत में स्त्रियों को पश्चिम की स्त्रियों की भांति संविधान में समान अधिकार की लड़ाई नहीं लड़नी पड़ी कानूनी धरातल पर समान अधिकार प्राप्त होने पर भी आम स्त्री इन अधिकारों से परिचित न हो पायी। भारतीय समाज में स्त्री–विमर्श के विचार की शुरुआत का श्रेय पुरुष वर्ग को ही जाता है। सामाजिक रुढ़ियों, कुरीतियों के तहत स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने वाले राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे पुरुष ही थे। जिन्होनें सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों से स्त्रियों को बचाने के लिए भर्सक कदम उठाये।

आधुनिक साहित्य में स्त्री–विमर्श सार्वाधिक चर्चित विषय रहा है 'सीमोन द बोउवार' की' द सेकण्ड सेक्स' का हिन्दी अनुवाद कर प्रभा खेतान ने स्त्री विमर्श की नींव तैयार की और इसी से प्रेरित होकर आधुनिक लेखिकाओं ने स्त्री के प्रति समाज की मानसिकता व रुढ़ियों पर आधारित पारिवारिक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा से प्रयत्नशील नजर आती हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य में भी स्त्री–विमर्श कई धाराओं में विकसित हुआ।

मध्यमवर्गीय स्त्री का पूरा संघर्ष दैहिक स्वतंत्रता से लेकर आर्थिक स्वतंत्रता तक सिमटा हुआ है। स्त्री–विमर्श बीसवीं सदी के आरम्भ में स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई यह समय ऐसा था जब स्त्रियाँ राष्ट्रीय स्तर पर संगठित हुई।

1908 में लेडिज कांग्रेस का सम्मेलन हो या 1917 में गठित विमेंस इंडियन एसोसिएशन ऐसे ही बड़े संगठन थे।

"राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाली महिलाओं ने आधुनिकता को राष्ट्रीय जागृति के रूप में देखा और उसी जागृति की ओर अग्रसर होने में अपने सारे प्रयत्न लगा दिये।"[3]

हिंदी की नारीवादी विमर्श की भी अपनी विचारधारा है और यह विचारधारा अचानक से एक दिन में विकसित नहीं हुई बल्कि यह एक लम्बें संघर्ष और समझ का परिणाम है। आज अनेक आयामों में स्त्री–लेखन होना इसका प्रमाण है।

महिला रचनाकारों की रचनाओं में ही स्त्री विमर्श की परिणति अपने चरम में रही है, महिला साहित्यकारों में जिसने स्त्री होकर अपने जीवन में सारी सामाजिक मान्यताओं को तोड़कर भगवान को पति मानकर स्वछंद जीवन जीने का प्रयत्न किया वे मीरा ही थी भक्तिकाल की मीरा के बाद महादेवी वर्मा को भी आधुनिक मीरा कहा जाता है, क्योंकि उन्होनें समाज में नारी की यातनाओं को वास्तविक धरातल पर अनुभव किया है।

महादेवी वर्मा ने चौथे दशक में स्त्रीवादी विमर्श के अनेक उत्तेजित प्रश्नों को समाज के सामने रखा उनका मानना है।

पुरुषों ने हमेशा से यह ही प्रयास किया कि स्त्रियाँ समाज में उनके द्वारा बनायी गई रुढ़ियों और परम्पराओं के चक्रव्यूह से निकल न पाए।

स्त्री–विमर्श पितृसत्तात्मक समाज के हिंसक व्यवहार , प्रहार, दुर्व्यवहार करने वाली मानसिकता पर करारी चोट करता है, स्त्री–विमर्श एक पूर्ण व्यक्तित्व विमर्श हैं वर्तमान समय में स्त्री–विमर्श को एक शास्त्र के रूप में भी अपनाया जा रहा है।

मृणाल पांडे इसे दर्शन के रूप में देखती हैं, " आज नारीवादी हमारे यहाँ एक अपरिचित या त्याज्य दृष्टिकोण नहीं बल्कि एक सार्थक स्वीकृत समग्र दर्शन के रूप में स्वीकार्य हो चला है।"[4]

स्त्री–विमर्श पर लिखने वाली महिलाओं में मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मृणाल पांडे, राजी सेठ, नमिता सिंह, सुधा अरोड़ा, सूर्यबाला आदि महिलाओं ने स्त्री विमर्श से संबन्धित सभी समस्याओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। चित्रामुद्गल मूल्यगत परिवर्तनों की मांग करती है, और ममता कालिया का 'बेघर' मृदुला गर्ग का 'चित्तकोबरा' स्त्री के नैतिक यौन नियमों को चुनौती देता है। एक समग्र दृष्टि से देखें तो समकालीन महिला लेखन में सेक्स का बोल्ड चित्रण किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा की 'चाक' और कृष्णा सोबती की 'सूरजमुखी अंधेरे के' 'मित्रो मरजानी' में यौन राजनीति का खुला प्रदर्शन हुआ है। प्रभा खेतान ने अपनी रचना 'छिन्नमस्ता' के द्वारा स्त्री के अत्तर्विरोधों और अर्त्तसंघर्षों को दर्शाया है, साथ ही उन्होंने स्त्री के लिए आर्थिक आत्म निर्भरता के महत्व को भी व्यक्त किया है। स्त्री विमर्श को किसी एक परिभाषा में व्यक्त कर पाना काफी मुश्किल है, क्योंकि यह बहुत ही विस्तृत विषय है, लिंग भेद की राजनीति स्त्री को अलग–अलग क्षेत्र में अलग प्रकार से प्रभावित करती है। इस प्रकार नारी–विमर्शो को अलग–अलग करके देशकाल व परिस्थितियों के अनुसार समझा जा सकता है कि किस प्रकार स्त्री को हाशिये पर रखा गया है, स्त्री–विमर्श एक वैश्विक स्तर का विषय होने के कारण यह विश्व चिंतन में एक नई बहस को जन्म देता है।

स्त्री–मुक्ति की दिशाओं की शुरुआत में प्रज्ञा रावत की इस कविता से शुरु करना चाहूँगी–

" जितना सताओगे, उतना उठूँगी।
जितना दबाओगे, उतना उगूँगी।
जितना बाँधोगे, उतना बहूँगी।
जितना बंद करोगे, उतना गाऊँगी।
जितना अपमान करोगे, उतनी निडर हो जाऊँगी।
जितना सम्मान करोगे, उतनी निखर जाऊँगी।"[5]

मुक्ति की कामना प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक कामना होती है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र होना आवश्यक है, स्वतंत्रता का अर्थ आजादी नहीं बल्कि एक जीवन मूल्य है।विश्व में स्त्री मुक्ति के संघर्ष का इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना स्त्री के शोषण का इतिहास। समता, स्वातंत्रय, समानता के इस युग में नारी स्वतंत्रता का अपना विशेष महत्व है, मानव समाज और राष्ट्र की उन्नति एवं विकास के लिए स्त्री–मुक्ति आवश्यक है।

स्त्री मुक्ति आंदोलन चाहे वह पाश्चात्य हो या भारतीय स्त्री को अपनी मुक्ति के लिए एक लम्बा संघर्ष तय करना पड़ा है। पाश्चात्य एवं भारतीय स्त्री के मुक्ति के दृष्टिकोण अलग–अलग दिखाई देते हैं। पाश्चात्य स्त्री आर्थिक स्वतंत्रता, मताधिकार, पुरुषों के समान स्थान आदि के लिए संघर्षरत दिखाई देती है। लेकिन भारतीय स्त्री आर्थिक स्वतंत्रता से भी महत्वपूर्ण स्वयं के जीवन को जीने के अधिकार को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती रही। भारत में जो स्त्रीवाद तथा स्त्री मुक्ति आंदोलन की परम्परा है, वह पाश्चात्य विचारों से प्रभावित रही है स्त्री मुक्ति की दिशाओं में शिक्षा का अधिकार एक महत्वपूर्ण कदम है आज स्त्री अपनी शिक्षा के प्रति जागरुक है तथा वह जानती है कि शिक्षित होने के बाद ही वह अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो सकती है क्योंकि इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव सभ्यता का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव हुआ है आज की स्त्री जानती है कि शिक्षा ही वह हथियार है जिसे पाकर वह अपनी अधिकारों की मांग कर सकती हैं।

" भविष्य में भारतीय समाज की क्या रुपरेखा हो उसमें नारी की कैसी स्थिति हो उसके अधिकारों की क्या सीमा हो आदि समस्याओं का समाधान आज भी जाग्रत और शिक्षित नारी पर निर्भर है।"[6]

बहुमुखी शिक्षा के साथ ही नारी मुक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि के कारण राजनीतिक और सामाजिक संस्थानों से स्त्रियों का जुड़ाव और नौकरियों में आना भी इसके मुख्य कारण रहे 1975 में अत्तराष्ट्रीय स्त्री सम्मेलन बर्लिन में हुआ जिसमें एक सौ से अधिक स्त्रियों ने भाग लिया और नारी–मुक्ति की एक जबरदस्त लहर भारत में भी आयी। स्त्री–मुक्ति में आर्थिक स्वावलंबन का महत्वपूर्ण स्थान है आज स्त्रियाँ हर क्षेत्र में आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहती है, आर्थिक तौर पर पुरुष–आश्रित व्यवस्था भी उनको अधिक कमजोर कर देती है। वे पति के मरने पर ससुराल या माइके के परिवार पर पूरी तरह आश्रित हो जाती हैं, स्त्रियाँ बाहर से कमाकर पैसा नहीं लाती इसलिए विधवा या बांझ होने पर दहेज में पति के सहायतार्थ कम सम्मान या राशि लाने पर उन्हें ही प्रताड़ित किया जाता है अगर वह आर्थिक रूप से स्वावलम्बी हो तो उस पर जुल्म नहीं होगें स्वावलम्बी होने से औरत का स्वाभिमान बढ़ता है और उसका आत्मसम्मान भी स्वावलंबन उसे बेड़ियों से मुक्त करने का एक मजबूत आधार देता है स्त्रियाँ अपनी मुक्ति के लिए पुरुष के समान अधिकारों की मांग करती है क्योंकि उन्हे पितृसत्तात्मक समाज में दोयम दर्जे का स्थान दिया जाता रहा है, लेकिन आज स्त्री शिक्षित होने के कारण समान अधिकारों की मांग करती हैं आज उसने जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष को चुनौती देकर अपनी शक्ति की परीक्षा देने का प्रण किया तथा उसी में उत्तीर्ण होने को जीवन की चरम सफलता समझती है। सदियों से पुरुषों ने स्त्रियों को अपने स्वार्थवश सीमित स्वतंत्रता अथवा पूर्ण पराधीनता की बेड़ियों से जकड़े रखा जिसके परिणामस्वरूप सदियों से स्त्रियों में धुटन की विवशता ने आक्रोश और विद्रोह की भावना धीरे–धीरे भर दी इसी कारण समाज में स्त्री–मुक्ति आंदोलन का स्वर गूंज रहा है आधुनिक समय में स्त्री ने पुरानी रुढ़ियों और नैतिक वर्जनाओं का उल्लंघन किया जो उसके विकास के मार्ग में बाधा डालते है वह समाज से समता, समानता, बंधुत्व व भाई चारे की मांग करती है तथा उन रुढ़ियों पर प्रश्न चिह्न लगाती है जिन्होनें उसे अनेक वर्षो से दासता की जिदंगी जीने पर मजबूर किया तथा वह आज उन नैतिकताओं का उल्लंघन करने में भी पीछे नही हटती जो उनकी स्वतंत्रता की मांग में बाधा डालती है आज वह उस विवाह संस्था का भी विरोध करने से पीछे नही हटती जो उसे बेड़ियों में बांधे।

" कुछ अपने तनाव से मुक्ति पाने के लिए दुःख भरा जीवन जीना अधिक पसंद कर पति से प्रसन्न न होने पर स्वतंत्र जीवन जीने का भी साहस रखती है।"[7]

आज अविवाहित स्त्री भी प्रेम के लिए विद्रोह करने लगी है सुधा अरोड़ा की 'चरित्रहीन' की नायिका अनेक पुरुषों से सम्बध स्थापित करती है, लेकिन उसे अपने पर कोई शर्म नहीं लोग उसे चरित्रहीन मानते हैं लेकिन वह स्वयं की दृष्टि में पवित्र हैं तथा वह आज 'लिवइन रिलेशनशिप' की मान्यता को मंजूरी देती है वह कहती है जिस प्रकार पुरुष अनेक स्त्रियों से सम्बध रख सकता है तो वह क्यों नहीं? उसे आज समर्पित होना पसंद नहीं स्त्री–मुक्ति आंदोलन ने नारी को व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई आज नारी अनेक पदों में सुशोभित हो रही है इसी से स्त्री–मुक्ति आंदोलन का स्वर आज पूरे समाज में गूंज रहा हैं।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है, कि स्त्री–विमर्श प्राचीन भारतीय वाड्मय से लेकर आज तक किसी–न–किसी रूप में विचारणीय हैं, स्त्री–विमर्श के अत्तगर्त स्त्री मुक्ति से जुड़े हुए प्रश्न इक्कीसवीं शताब्दी के सबसे ज्वलंत मुद्दे हैं पूरे विश्व में स्त्री–विमर्शों का उभार है जो भूमण्डलीकरण युग की देन है यह स्वयं में एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो विकसित राष्ट्रों से विकासशील पिछड़े हुए देशों में चल रही है, बीसवीं सदी के मुक्ति संघर्षों में स्त्री का मुक्ति संघर्ष शायद सबसे अधिक मूलगामी और सार्वभौमिक रहा है, इस संर्घष की व्यापकता का एक महत्वपूर्ण पक्ष यही रहा है कि यह जितना बाहरी तौर पर संगठित हुआ है उतना ही आंतरिक स्तर पर भी और आधुनिक हिन्दी साहित्य में पिछले दो–तीन दशकों से स्त्री लेखन में ज्यादा उभार आया है यह इसका प्रमाण है।

अंत टिप्पणी

1. *सीमोन द् बोउवार : द् सेकेण्ड सेक्स (अनु० प्रभा खेतान स्त्री उपेक्षिता) प्रकाशन हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ०21*
2. *डॉ. अर्जुन चव्हान : विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन ,नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ० 29*
3. *डॉ. मानवेश नाथ दास : महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य, संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ० 119*
4. *मृणाल पांडे : परिधि पर स्त्री, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1998 ,पृ० 47*
5. *मधु धवन : नारी लेखन और समकालीन समाज, प्रकाशन क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ० 192*
6. *मानवेश नाथ दास : महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य, संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ० 119*
7. *डॉ रेणु गुप्ता : हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली–110032, पृ० 226,227*